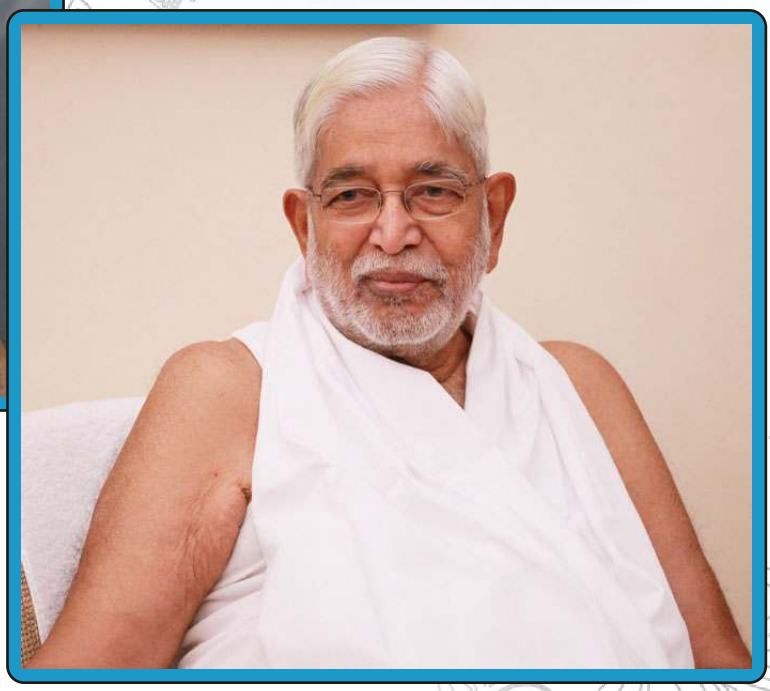

चेन्नई में गुरुदेव

नव वर्ष के आनंदोत्सव के बाद गुरुदेव 'गायत्री' जाने की योजना बना रहे थे लेकिन अस्वस्थ महसूस करने के कारण उन्होंने आश्रम में ही विश्राम करने का निश्चय किया।

शाम के समय भारत के विभिन्न भागों और विदेशों से आये हुये अभ्यासी एक बड़े समूह में गुरुदेव से मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही वे अपने कार्यालय से बाहर आये, उन्होंने कहा, "मैं यह देखकर प्रसन्न हूँ कि आप सबमें इतने लम्बे समय तक मुझसे मिलने की प्रतीक्षा करने का धैर्य है।" इतना कहकर उन्होंने अपने बहुमूल्य समय में से दस मिनट निकाल कर अभ्यासियों से गलियारे में खड़े रहकर बात की। वहाँ पर जर्मनी, फ्राँस आदि देशों के अभ्यासी थे और गुरुदेव ने मज़ाक में कहा, "जर्मनी किसी बात के लिये प्रसिद्ध है, फ्राँस डबलरोटी के लिये प्रसिद्ध है, इटली कॉफी के लिये प्रसिद्ध है, और भारत आध्यात्मिकता के लिये प्रसिद्ध है।"

४ जनवरी को गुरुदेव ने ध्यान कक्ष में सत्संग कराया। अगले दिन भार्गव लंदन जा रहा था, इसलिये गुरुदेव प्रात: ४ बजे ही जाग गये और भार्गव को विदा करने के लिये आ गये। इसके पश्चात् गुरुदेव बाहर ही बैठ गये और लगभग साढ़े पाँच बजे उन्होंने अपनी कॉफी पी।

७ जनवरी को गुरुदेव संचार दल (मीडीया टीम) कार्यशाला में गये और उन्होंने उस दिन के विषय 'भाईचारा' पर एक वार्ता दी। उन्होंने अपनी वार्ता की शुरुआत श्रोताओं से यह प्रश्न पूछकर की, "क्या आप सब वास्तव में अभ्यासी हैं? यदि आप सब वास्तव में अभ्यासी हैं तो मुझे नहीं लगता कि भाईचारा जैसे विषय पर कोई कार्यशाला होनी चाहिये।" उन्होंने कहा कि व्यक्तियों के अंहकार से उठ रहे झगड़ों, उनमें आपसी असहमति और दलीय भावना के कारण वे लोग आपस में सदभावना के साथ कार्य करने में सक्षम नहीं हैं, और उन्होंने कहा कि वे प्रत्येक वस्तु जिनमें अभ्यासी भी सम्मिलित हैं को फेंकना पसन्द करेंगे और बाबूजी महाराज के समयकाल की तरह कुछ ही अभ्यासियों के साथ घर पर ही कार्य करना पसन्द करेंगे। इसके पश्चात् उन्होंने कहा," मैं आशा करता हूँ कि आप लोग कुछ समझ अपने उन कुशाग्रबुद्धि वाले दिमाग में अवश्य ही डाल सकते हैं जोकि इतना कुशाग्रबुद्धि है कि यह दूसरों की योग्यता की कद्र नहीं कर सकता।" उन्होंने बोलने के बजाय' भाईचारा के अभ्यास' की आवश्यकता पर बल दिया।

रविवार, ८ जनवरी २०१२

सत्संग कराने के बाद गुरुदेव कॉटेज में वापस आ गये और कुछ समय के पश्चात् जब वे रूसी भाषा के पाठ पढ़ने के लिये अपने कार्यालय जा रहे थे तो उन्होंने कुछ अभ्यासियों को उनसे मिलने के लिये एक पंक्ति में खड़े हुये देखा। उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में कहा, "आप सबको आज प्रात: ही एक अदभुत् सत्संग मिला है। मुझसे इससे ज़्यादा की अपेक्षा मत रखिये।"

रूसी भाषा का पाठ समाप्त करने के बाद वे कार्यालय में अभ्यासियों के एक समूह से बात कर रहे थे। भाषाओं के बारे उन्होंने कहा, "एक नयी भाषा को सीखना केवल शुरुआत में ही कठिन होता है। यह प्रारंभ में कुछ भाषाओं तक ही सीमित है। एक बार जब आप कुछ भाषाओं को सीखने की प्रक्रिया से गुज़र जाते हैं तो और ज़्यादा भाषाओं को सीखना बहुत आसान हो जाता है।" उन्होंने कहा, "आनन्द की कीमत जितना आप सोचते हैं उससे कहीं ज़्यादा है।" "मैं जो कुछ नही जानता, उसके साथ मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

मंगलवार, १० जनवरी २०१२

फ्राँस और वेनेजुएला से आये हुये लगभग चालीस अभ्यासी कक्ष में एकत्रित थे और गुरुदेव ने आकर उनका अभिवादन किया। गुरुदेव ने पूछा, "क्या यहाँ कुछ नये अभ्यासी हैं?" इस पर कुछ अभ्यासियों ने अपने हाथ उठा दिये। एक अभ्यासी ने कहा, "मालिक मैं पाँच साल से अभ्यासी हूँ, क्या मैं नया अभ्यासी हूँ?" इस पर गुरुदेव ने कहा। "नहीं, आप एक अच्छे अभ्यासी हैं।" और सब लोग हँसने लगे। गुरुदेव ने कहा," मैं पचास सालों से अभ्यासी हूँ और अभी तक मुझे प्रश्न है। लेकिन विज्ञान के पारम्परिक ज्ञान की तरह आध्यात्मिक ज्ञान को सीखा नहीं जाता बल्कि प्राप्त किया जाता है। उन्होंने कहा कि बाबूजी ज्ञान के एक विशाल सरोवर के जैसे हैं लेकिन नल को खोलकर उस ज्ञान को प्राप्त करने वाला यहाँ कोई नहीं है।

गुरुदेव ने बताया कि उन्होंने एक गोष्ठी के दौरान बाबूजी की आँखों में उस समय आँसू देखे थे जबकि वे अभ्यासियों को बहुत कुछ देना चाहते थे लेकिन वहाँ लेने के लिए कोई नहीं था और उसके बाद बाबूजी को उसे वातावरण में बिखेर देना पड़ा।

एक प्रश्न पूछा गया, "क्या आभार और कृतज्ञता में कोई अंतर है?" गुरुदेव ने कहा, "हाँ, एक बड़ा अंतर है। देखो, कृतज्ञता दिल से आती है जबकि आभार दिमाग से आता है।

बुधवार, ११ जनवरी २०१२

गुरुदेव ने सुबह का सत्संग कराया और उसके पश्चात् १० विवाह सम्पन्न कराए। दोपहर के समय गुरुदेव ने स्काइप के द्वारा जम्मू के नवनिर्मित आश्रम का सजीव वीडियो देखा। इस प्रस्तुति के पश्चात् गुरुदेव ने कहा कि उन्होंने ऐसा महसूस किया कि वे इस आश्रम के सम्पूर्ण स्थल पर होकर आए हैं और अभ्यासी इसे उद्घाटन मानकर ध्यानकक्ष का इस्तेमाल करना आरम्भ कर सकते हैं।

१२ जनवरी को गुरुदेव 'गायत्री' चले गए और १४ जनवरी की सुबह ९ बजे वापस आ गए।

रविवार, १५ जनवरी २०१२

गुरुदेव ने ओमेगा स्कूल के १२वीं कक्षा के सभी बच्चों को दोपहर के नाश्ते के लिए आमंत्रित किया था। नाश्ते के पश्चात् गुरुदेव बाहर आकर धूप में बैठ गए। उन्होंने निर्देश दिया कि केवल बच्चे ही उनके समक्ष बैठें और वे काफी लम्बे समय तक बच्चों से बातें करते रहे। उन्होंने कहा, "सफलता की ओर नहीं देखना चहिए लेकिन असफल भी नहीं होना चाहिए।" स्कूल में शिक्षा, तथा नैतिकता और सदाचार स्कूल और घर दोनों में ही सिखाए जाते हैं, ये दोनों नदी के दो किनारों की भाँति होने चाहिए, और दोनों किनारों के बिना नदी का अस्तित्व नहीं है। प्रत्येक को इसका अहसास होना चाहिए कि नदी का प्रवाह मध्य में सर्वाधिक होता है और हमें मध्य में रहकर, दोनों किनारों से दूर रहकर, तेजी से आगे बढ़ना चाहिए।

१७ से २२ जनवरी तक गुरुदेव रूस और पुराने सी.आई.एस. देशों से आए रूसी भाषी अभ्यासियों की गोष्ठी में व्यस्त थे। उन्होंने प्रत्येक दिन इन अभ्यासियों के साथ उन्हें सत्संग कराने और उनके साथ बात करने में व्यतीत किया। गुरुदेव अभ्यासियों (लगभग ५००) के साथ काफी प्रसन्न दिख रहे थे। उन्होंने इन अभ्यासियों के साथ अपनी कॉटेज में शाम का भोजन किया, उनमें से कुछ नए प्रशिक्षक बनाए और अपनी कॉटेज में बैठकर सी.सी.टी.वी. के द्वारा भाई चक्रपानी, भाई कमलेश पटेल, और भाई पी.आर.कृष्णा द्वारा दी गयी वार्ताओं को देखा।

१७ और १९ जनवरी को गुरुदेव ने प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। अपनी वार्ता में गुरुदेव ने कहा:

चरित्र के विषय में:

यह आध्यात्मिक जीवन का एकमात्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। इच्छाएं बाहर स्थित किसी वस्तु में नहीं हैं बल्कि हमारे अन्दर विराजमान हैं। उन्होंने कहा कि इच्छाएं सदैव सुप्त अवस्था में रहती हैं और सही अवसर आने पर जब कोई बाहरी वस्तु प्रकट होती है तो ये जागृत हो उठती हैं। इन सभी इच्छाओं और प्रलोभनों को हमें अपने अन्दर से साफ कर देना ही उचित है, यह सहज मार्ग में एक अनूठा समाधान है।

जरूरतें और इच्छाएं:

हमें अपने जीवन को सुचारू रूप से व्यतीत करने तथा उसमें जरूरतों और इच्छाओं में अन्तर समझने की योग्यता विकसित करनी चाहिए। सभी आवश्यकताएं मूलभूत और जरूरी होती हैं जैसे खाना, आश्रय और कपड़े, जोकि उपलब्ध कराये जायेंगे। किन्तु इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो सकती। उन्होंने बाबूजी का सन्देश याद दिलाया, "जीवन इतना सादा हो कि प्रकृति में मिलजुल जाए।"

गुरुदेव त्रिची में

२३ जनवरी सोमवार को गुरुदेव वायुमार्ग से त्रिची के लिये रवाना हुए। यह एक निजी यात्रा होनी चाहिये थी, लेकिन गुरुदेव ने बताया कि वहां बहुत से अभ्यासी पहुँच गये थे, इस पर किसी ने गुरुदेव से पूछा, "मालिक, आप ने उन सब को अनुमति दी है!" तब मालिक ने यह कह कर जवाब दिया, देखो, यह वैसा ही है जैसा लॉर्ड ऑफ द रिंग्स फिल्म में फ्रेडो गेंडाल्फ से कहता है" प्रान्त के आधे आमंत्रित हैं और शेष बचे हुए भी आ रहे हैं।" सभी यह सुनकर बहुत हँसे।

लगभग १४२ विदेशी अभ्यासी गुरुदेव के साथ थे। रूस से लगभग ६० अभ्यासी सड़क के रास्ते आये। २४ को गुरुदेव ने विश्राम किया और सुबह के सूर्य के प्रकाश में बैठकर पक्षियों की आवाजों और गुड़ की खुशबू के साथ प्रकृति का आनन्द लिया । एक सूक्ष्म वातावरण मे सभी डूब गये थे और सभी ने इस अद्वितीय कृपा को अनुभव किया।

बातचीत के बीच उन्होंने कहा, "यदि सभी यह प्रतिज्ञा कर लें कि न तो पैसा देंगे और न ही पैसा लेंगे तो भ्रष्टाचार के लिये कोई स्थान नहीं रहेगा"।

२५ तारीख को मालिक ने सुबह का सत्संग करवाया । सत्संग के बाद एक

अनौपचारिक सभा में उन्होंने कहा, "बच्चों का ध्यान रखें। ऐसा कोई समाज जो बच्चों और औरतों का ख्याल नहीं रखता, फल फूल नहीं सकता" ।

२६ तारीख मालिक ने 'जानकी' फार्म पर सभी अभ्यसियों को उदारता पूर्वक रात्रि भोज करवाया। २७ तारीख को जब वे सुबह की धूप में बैठे थे, उन्होंने निम्नलिखित बातें कहीं:

❖बाबूजी महाराज की बाँयी आँख की पलकें हमेशा थोडी नीची रहती थीं। एक बार मैंने उनसे नेत्र परिक्षण करवाने के लिये निवेदन किया, जिस पर उन्होंने बताया कि "वे अपनी वह आँख हृदय पर तथा दूसरी आँख बाहरी दुनिया पर रखते हैं"।

❖ दर्द हमें जागृत करता है, खुशी नहीं।

❖पुराने समय में 'वाल्व' रेडिओ होता था, जिसमें बीबीसी सुनने के लिये बहुत ट्यूनिंग करनी पड़ती थी। आपको इसी तरह की ट्यूनिंग अपने हृदय पर भी अपनानी चाहिये।

२८ जनवरी को 'जानकी' फार्म पर भाई गणेश और भाई कुमारेश ने वॉयलिन वादन प्रस्तुत किया, मालिक ने इसका आनन्द लिया। फार्म पर मालिक ने दो नवजात बछड़ों का नामकरण पद्मा और मारुधाम किया। २९ तारीख को उन्होंने दो शादियां करवाई। ३० तारीख को मालिक तँजावुर की यात्रा पर जाने वाले थे पर वे अस्वस्थ महसूस कर रहे थे इसलिये विदेशी आभ्यासियों के साथ भाई कमलेश गये। उन्होंने दो सत्संग करवाये और आश्रम और रहवासी कॉलोनी की जमीन पर घूमने गये।

गुरुवार, २ फरवरी २०१२

त्रिची आश्रम में लगभग २००० आभ्यासियों ने पूज्य लालाजी महाराज के जन्म उत्सव में भाग लिया। उसके बाद ६ तारीख को मालिक चेन्नई के लिये रवाना हुए।

चेन्नई को वापसी

मालिक ६ फरवरी को चेन्नई वापस लौटे। आभ्यासियों से बात करते हुए उन्होंने बताया कि हमारे जीवन मे भाग्य किस प्रकार अपनी भूमिका निभाता है, और ओमर खैय्याम की पंक्तियों का उद्धरण दिया।

"यह रात और दिन शतरंज की बिसात है, जहां भाग्य टुकड़े करने के लिये

खेलता है: यहाँ वहाँ की चालें और मात देना और घात करना, और एक एक करके वापस कोठरी में भेज देना"।

उन्होंने इन पंक्तियों का उदाहरण यह समझाने के लिये दिया कि कैसे हम कुछ योजनायें बनाते हैं लेकिन भाग्य अपने तरीके से चलता है।

उन्होंने बाबूजी को बताया था कि गहरे सत्संग के बाद उठना और काम पर जाना बहुत कठिन होता है और बाबूजी महाराज ने कहा था, "सक्रियता शरीर का जीवन है, निष्क्रियता आत्मा का जीवन।" मालिक ने आगे बताया कि किसी मनुष्य में जैसे–जैसे आत्मा विकसित होती है वह कार्यभार संभाल लेती है, जो निष्क्रियता की अवस्था पसंद करती है। उन्होंने इसे 'सहज समाधी' की अवस्था से जोडा जहाँ 'एक' पूरी तरह जागरुक होते हुए भी पूरी तरह डूबा हुआ रहता है और निष्क्रियता की अवस्था में रहता है। इसके बाद मालिक ने कहा, "अब मैं सोना चाहूंगा लेकिन इसके बजाय मैं अपनी इच्छा शक्ति का उपयोग करके कुछ काम करुँगा"।

बुधवार, ८ फरवरी २०१२

पूज्य गुरुदेव ने मज़ाक में इस पुस्तक के शीर्षक "देवदूत एवं दैत्य" के संदर्भ में बताया कि कैसे ये दोनों इस सृष्टि के लिए आवश्यक हैं। उसके बाद उन्होंने भगवान शिव के बारे में चर्चा करते हुये कहा कि वे कैलाश पर्वत पर बर्फ पर विराजमान हैं तथा उनके श्रोताओं में ऋषि–मुनि, देव, असुर और दैत्य भी सम्मिलित हैं। पूर्ण सृष्टि भगवान शिव के तांडव नृत्य को देखने प्रत्यक्षदर्शी के रूप में उपस्थित हैं। जब गुरुदेव से भगवान विष्णु के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि विष्णु दया और परोपकार के प्रतीक हैं, उनके इस तरह के श्रोतागण नहीं होते हैं । पूज्य गुरुदेव 'गायत्री' में एक सप्ताह के लिए थे तथा वे १८ फरवरी को मणपाक्कम वापस आये।

"इस प्रकार वास्तविक आध्यात्मिक प्रशिक्षण वह है जो हमारे मन को अनुशासित और नियंत्रित करे, इंद्रियों और प्रवृत्तियों में समभाव बहाल करे तथा आंतरिक हलकापन पैदा करे। सिर्फ तभी आंतरिक शांति एवं निश्चलता सुनिश्चित होती है तथा ऊँची पहुँच संभव है।"

–बाबूजी महाराज

सत्य का उदय, पेज ६२ से अवतरित

नये प्रकाशन

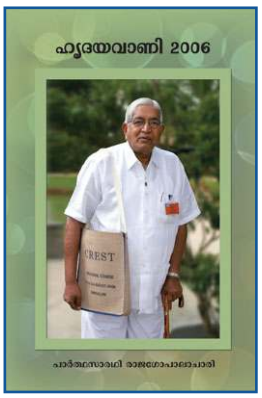

दिल की आवाज़ २००६
(मलयालम)

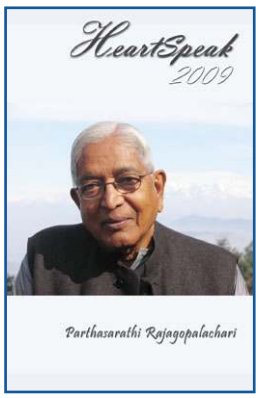

दिल की आवाज़ २००९
(अंग्रेजी)

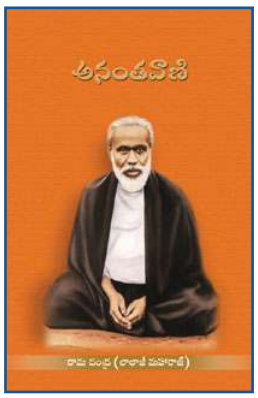

शाश्वत सत्य
(तेलगु)

सहज मार्ग क्या है
(अंग्रेजी)

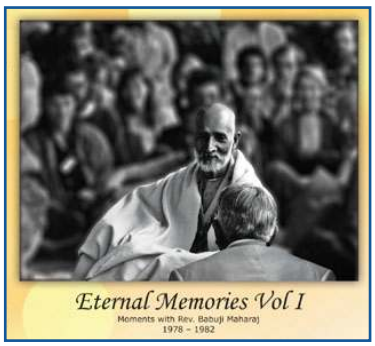

इटर्नल मेमोरीज़ भाग–१

इस पुस्तक मे पश्चिम के अभ्यासियों द्वारा लिये गये बाबूजी महाराज के बहुमूल्य संक्षिप्त 'क्लिप्स' (प्रसंगो) का संकलन है। इसमें कुछ बहुआयामी घटनायें जैसे शाहजहांपुर में जीवन तथा बसंत उत्सव के साथ ही साथ पूज्य बाबूजी महाराज के १९८२ में दिल्ली में हुए जन्म दिवस समारोह की झलकियाँ तथा उनकी यूरोप यात्रा के संस्मरण सम्मिलित हैं।

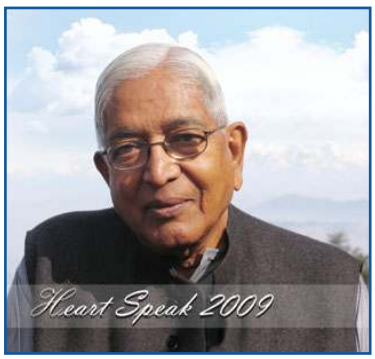

दिल की आवाज़ २००९:

यह एक एम पी–३ ऑडियो का सी.डी.संग्रह है जिसमें वर्ष २००९ में पूज्य गुरुदेव द्वारा दी गई सभी वार्तायें सम्मिलित हैं। इस संग्रह में कुल ३४ वार्ताओं का संग्रह है।

उत्तराधिकारी का नामांकन

इसमें पूज्य गुरुदेव द्वारा कोलकत्ता में ३ अक्टूबर २०११ को अपने उत्तराधिकारी के रूप में भाई कमलेश पटेल के नामांकन की घोषणा सम्मिलित है इसके साथ ही मुम्बई, अहमदाबाद और चेन्नई में उनके द्वारा भाई कमलेश पटेल को अपना उत्तराधिकारी घोषित किये जाने के बारे में दी गई विभिन्न संक्षिप्त परिचयात्मक वार्तायें सम्मिलित हैं। अंत में एक संक्षिप्त 'फोटो सैर' भी है जिसके भाई कमलेश पटेल के पूज्य गुरुदेव एवं बाबूजी महाराज के साथ कुछ विरले छायाचित्र सन्निहित हैं।

इंसान बनो

इस डी.व्ही.डी में पूज्य गुरुदेव की, गुव्हाटी में ९ अक्टूबर २०११ को, दी गई वार्ता 'इंसान बनो' है जिसमें के बाद गुड़गाँव आश्रम में आयोजित एक अनौपचारिक वार्ता का आलोकित सत्र भी सम्मिलित है। ये दोनों वार्तायें जो हिन्दी में हैं, इसके दौरान उपस्थित अभ्यासियों को पूज्य गुरुदेव ने भाई कमलेश पटेल का अपने उत्तराधिकारी के रूप में परिचय कराया।

१४० वाँ जन्मोत्सव

पूज्य लालाजी महाराज

"अतः, ओ सत्य की खोज करने वालों ! यदि तुम सचमुच आनन्द की तलाश में हो तो अपने अंदर मे रहने की कोशिश करो; आनन्द को अपनी आत्मा में ढूँढो; आत्मा के स्तरों के बारे में ज्ञान प्राप्त करो; सत्य के जिज्ञासु बनो, और तुम शाश्वत आनन्द पाओगे।"

– पूज्य लालाजी महाराज ने कहा
राम चन्द्र की सम्पूर्ण कृतियां (लालाजी), पेज २९३ से अवतरित

बंगलोर

कर्नाटक

परमधाम आश्रम, बंगलोर में लगभग १२०० अभ्यासी बड़े उत्साह के साथ पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थित हुए। प्रथम सत्र की वार्ताओं के बाद उद्धरणों पर एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम हुआ। अभ्यासियों को अन्तरावलोकन करके उद्धरणों के बारे में अपनी समझ को प्रकट करना था। आत्म–निरीक्षण द्वारा खुद में बदलाव लाने की अभ्यासियों की कोशिश–यही आम तौर पर दिन का मूल विषय रहा।

हुबली में बेलूर, धारवाड़, गदग, नवलगुंड, नवनगर, पुदलकट्टी और सिर्सी से आए अभ्यासी २२५ की रिकार्ड संख्या में कार्यक्रम में भाग लेते हुए दिखाई दिए। 'वह, हुक्का और मैं' से एक डी.वी.डी. दिखाई गई और बाद में अभ्यासी 'रामचन्द्र (लालाजी) की संपूर्ण कृतियाँ ' से लिए गए विषयों पर बोले। भजन, प्रश्नोत्तर–सत्र और युवा–वर्ग द्वारा प्रस्तुत एक लघु नाटिका 'द्रौपदी का गर्व–भंग' ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम सत्संग के साथ समाप्त हुआ। माहौल कुछ ऐसा था कि बहुतों को आश्रम छोड़ने का मन नहीं कर रहा था।

अलुवा

हुबली

केरल

अलुवा में एर्नाकुलम और इद्दिकी जिले के अभ्यासी सत्संग के लिए एकत्रित हुए जिसके उपरान्त एक लघु वार्ता और लालाजी के जीवन पर एक नाटक प्रस्तुत किया गया। विभिन्न केन्द्रों के अभ्यासियों और प्रशिक्षकों ने लालाजी के बारे में अपने अनुभवों और विचारों का आदान–प्रदान किया। भाई राधाकृष्णन् ने आश्रम पर एक कविता सुनाई।

कासरगोड़ में यूरोपीय संगोष्ठी–'हेवन' पर एक वृत्तचित्र दिखाया गया जिसके बाद वार्ताएँ, सुनहरा मौन, भजन और लालाजी के जीवन पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गयी। कार्यक्रम का समापन सत्संग के साथ हुआ।

गुलबर्गा और बिदर के आसपास के केन्द्रों से करीब ३०० अभ्यासी हुमनाबाद के समारोह–कक्ष में एकत्रित हुए जहाँ स्थानीय अभ्यासियों ने उत्कृष्ट व्यवस्था की थी। अनेक अभ्यासी लालाजी के बारे में बोले। बच्चों ने एक भरतनाट्यम् नृत्य प्रस्तुत किया और भाई एस्.ए.खाज़ी एवं समूह द्वारा एक बाँसुरी–वादन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हुमनाबाद

श्री गंगानगर

जोधपुर

अलवर

राजस्थान

श्री गंगानगर केन्द्र के १२० अभ्यासी भाई पारस पारीक के घर एकत्रित हुए। सत्संग के पश्चात् लालाजी महाराज के जीवन के विषय में एक लेख पढ़ा गया। भाई मुंशीलाल ने एक वार्ता दी जिसमें उन्होंने बताया कि भंडारे में भाग लेते समय तथा अपने व्यक्तिगत जीवन में हम किस प्रकार अनुशासन और सहनशीलता का पालन कर सकते हैं। इसके उपरान्त लालाजी महाराज के जीवन पर आधारित एक वीडियो दिखाया गया। दोपहर के भोजन के बाद गुरुदेव का एक वीडियो दिखाया गया जिसमें 'सच्चा प्यार' तथा 'प्यार बढ़ाए ' नामक वार्तायें थी। सभी अभ्यासियों ने खुले ह्रदय से इस उत्सव में भाग लिया। केन्द्र–प्रभारी भाई मुंशी ने सभी अभ्यासियों को नियमित रूप से रविवार का सत्संग तथा भंडारों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

जोधपुर आश्रम में ३८५ अभ्यासी तथा ६२ बच्चे एकत्रित हुए। अभ्यासियों ने 'गुरु तथा शिष्य के बीच का सम्बन्ध' नामक एक नाटिका प्रस्तुत की। बच्चों ने बड़े ही उत्साह और प्रेम के साथ विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लिया। शाम के सत्संग के बाद लालाजी महाराज के जीवन पर आधारित एक वृत्त–चित्र दिखाया गया।

अलवर आश्रम में १९० अभ्यासियों ने पूरा दिन सत्संग तथा बच्चों के लिए विभिन्न खेलों और अभ्यासियों द्वारा 'एक मिनट वार्ता' नामक सत्र में बिताया। लालाजी के जीवन को याद किया गया जो कि चरित्र के सद्गुणों से भरपूर था। नि:स्वार्थ प्रेम तथा सेवा, जिस पर कि गुरुदेव विशेष जोर देते हैं, उत्सव का मुख्य मूल तत्व था।

भीलवाड़ा आश्रम में लगभग १०० अभ्यासी एकत्रित हुए जो कि आस–पास के गाँव जैसे कि शाहपुरा, गंगापुर, सीकर, बिजयनगर और बनेड़ा से आए थे। सत्संग के पश्चात् लालाजी के जीवन पर एक प्रस्तुतिकरण दिया गया तथा कुछ भजन गाए गए। कुछ अभ्यासियों ने किताब में से लालाजी के सिखाए सिद्धान्त तथा कुछ प्रेरणादायक प्रसंग पढ़कर सुनाए। युवाओं ने 'आज्ञापालन' नामक नाटक प्रस्तुत किया।

महाराष्ट्र

पनवेल आश्रम मुम्बई में लगभग ६०० अभ्यासी एकत्रित हुए। लघु नाटिकाओं द्वारा लालाजी महाराज के जीवन के विभिन्न प्रसंगो पर प्रकाश डाला गया। साथ ही किताब पढ़ी गई और भजन सुनाए गए। दोपहर के भोजन के पश्चात् लालाजी महाराज के जीवन पर आधारित एक चलचित्र दिखाया गया।

पुणे में सत्संग और दोपहर के भोजन के उपरांत भजन सुनाए गए। तत्पश्चात् गुरुदेव का एक वीडियो दिखाया गया जिसमें उन्होंने सत्संग की गंभीरता पर जोर दिया। साथ ही लालाजी की कृति 'शाश्वत सत्य' से लिए गए अंशों द्वारा उनके जीवन पर आधारित एक प्रस्तुतिकरण दिया गया। इसके उपरान्त लालाजी के जीवन पर आधारित चलचित्र के कुछ लघु–अंश दिखाए गए तथा हर अंश के बाद अभ्यासियों को स्वाध्याय करने तथा अपने विचार प्रकट करने के लिए समय दिया गया।

अभ्यासियों ने उनके व्यक्तित्व के सूक्ष्म पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा यह पाया कि वे सभी के लिए एक जैसे थे। लालाजी का जीवन भौतिकता तथा आध्यात्मिकता का सुन्दर तालमेल था। शाम के सत्संग से पहले भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुत किया गया।

औरंगाबाद के निकट, लासूर केन्द्र में लगभग १५० अभ्यासी कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए आस–पास के केन्द्रों से आए। भाई संजय भाटिया ने उनके जीवन में सहज मार्ग के प्रभाव के विषय में बताया। बहन अनुसूया रविवार सत्संग के महत्व के विषय में बोली और भाई सुनील चन्द्रन ने गुरु के महत्व पर एक मोहक प्रस्तुतिकरण दिया। शाम के सत्संग के साथ दिन की समाप्ति हुई।

असम

गुव्हाटी में सत्संग के साथ उत्सव आरंभ हुआ। इसके उपरांत लालाजी की सादी जीवन शैली पर एक वार्ता दी गई जिसमें बताया गया कि वे किस प्रकार घरेलु समस्याओं को सुलझाते थे। तत्पश्चात् इकोज़ समाचार–पत्रिका के जनवरी अंक पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। इससे सभी अभ्यासियों को समाचार पत्रिका पढ़ने की प्रेरणा मिली। बच्चों के लिए एक चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

पुणे

मुंबई

गुव्हाटी

मिर्जापुर

लखनऊ

उत्तर प्रदेश

लखनऊ आश्रम में, करीब पाँच सौ अभ्यासी इकट्ठा हुए। सत्संग के बाद, लालाजी कि कहानी पढ़ी गई। बाद में, लालाजी पर फिल्म दिखाई गयी, जिससे सब अपने खुद के जीवन में आत्म निरीक्षण करने के लिए प्रेरित हुए। बहनों ने भजन गाये, बच्चों ने नृत्य प्रस्तुत किये और युवकों ने एक नाटक प्रस्तुत किया–"जीवन में जो भी होता है अच्छे के लिए होता है"। वातावरण बहुत सूक्ष्म और कृपा से भरा हुआ था और सब प्रेम भरे हृदयों के साथ घर वापिस लौटे।

मिर्जापुर में, नई खरीदी गई आश्रम की ज़मीन पर समारोह का आयोजन किया था जहाँ पर इलाहाबाद केंद्र के केन्द्रीय प्रभारी, भाई आर.आर.के त्रिवेदी, भी मौजूद थे। कुछ प्रशिक्षकों ने भी इस अवसर पर वार्तायें दी। एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ, गुरुदेव पर विडियो दिखाया गया और कार्यक्रम सत्संग के साथ खत्म हुआ।

तिरुपुर

उत्तराखण्ड

काशीपुर केंद्र में, सत्संग के बाद लालाजी महाराज के जीवन पर एक वार्ता हुई। करीब ४५ अभ्यासी जो मौजूद थे, उन्हें लालाजी के जीवन की विशेषताओं के बारे में वार्तालाप करने के लिये कई दलों में बाँटा गया। फिर, दलों ने अपने मुद्दों को पेश किया और फिर एक स्पष्टीकरण सत्र रखा गया था। परम गुरुदेव की याद में रहते हुए सब विस्मय, गहरे आदर और प्रेम से भरे थे। दोपहर के भोजन के बाद, कुछ भजन गाए गए और साधना के ऊपर स्पष्टीकरण के बाद दिन सत्संग के साथ खत्म हुआ।

उड़ीसा

उड़ीसा में कटक क्षेत्र के १३६ अभ्यासियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। सत्संग के बाद लालाजी की मानव जाति के आध्यात्मिक विकास की शिक्षाओं के बारे में चर्चा करने के लिए अभ्यासी फिर से एकत्रित हुए। चर्चा काफी दिलचस्प थी और युवकों का भाग लेना काफी प्रोत्साहक था। एक प्रशिक्षक बैठक, आम बैठक (पंद्रह सहभागी) और एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

तमिलनाडु

तिरुपुर का डायमण्ड जुबली पार्क तिरुपुर और आस पास के केंद्रों से आये ७५० अभ्यासियों से भरा था। सत्संग के अलावा तीनों गुरुदेवों के जीवन पर वार्ताओं और प्रस्तुतियों ने वातावरण को सुखद बना दिया। कुछ पलों में तो सबके हृदय एक साथ जवाब में पिघलने लगे जब महान गुरुदेवों के जीवनों को कोमलता एवं नर्मी के साथ छुआ गया। अभ्यासियों को बढ़िया नाश्ते और खान–पान की दावत दी गयी। सारे अभ्यासी दिल में गुरुदेव की कृपा लेकर घर लौटे।

झारखण्ड

चत्रा और हजारीबाग के केंद्रों से करीब तीस अभ्यासी चत्रा में इस दिन के लिये एकत्रित हुए। एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया।

पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम के लिए राँची केंद्र को खूबसूरती से सजाया गया था जिसमें लालाजी के जीवन पर फिल्म दिखाई गई और तत्पश्चात् कुछ भजन गाए गए।

जमशेदपुर में ३८ अभ्यासी एकत्रित हुए। यहाँ पर इन्होंने "शाश्वत सत्य" किताब से कुछ पन्ने पढ़े और बाद में वार्ता एवं प्रश्नोत्तरी सत्र रखा गया।

काशीपुर

कटक

आश्रम विकास

जम्मू आश्रम

जम्मू आश्रम

पय्यानूर आश्रम

उत्तर भारत के मुख्य राज्य जम्मू एवं कश्मीर में यह प्रथम केन्द्र व आश्रम है जो गोलगुजराल जम्मू के रणजीतपुर ग्राम में स्थित है। यह आश्रम रेल्वे स्टेशन से १० कि.मी., एयरपोर्ट से ११ कि.मी. तथा बस अड्डे से ६ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

दिनांक २ फरवरी, २०११ को आश्रम के लिए एक एकड़ भूमि क्रय की गयी थी, जिस पर लगभग २८०० वर्ग फीट के रसोई/भोजन प्रभाग का निर्माण किया जा चुका है। फिलहाल इसका उपयोग ध्यान हेतु किया जायेगा जब तक कि ध्यान हेतु एक कक्ष का निर्माण नहीं हो जाता।

मालिक ने दिनांक ११ जनवरी, २०१२ को अपने चेन्नई स्थित कार्यालय में जम्मू आश्रम की तस्वीरें एवम् वीडिओ के प्रस्तुतिकरण का अवलोकन किया। अवलोकन के पश्चात् मालिक ने ये उदगार व्यक्त किये– "मैं आश्रम में पहले ही प्रवेश कर उद्घाटन कर चुका हूँ, आज ही कक्ष में ध्यान शुरू करें"। उसी दिन पहला सत्संग सांयकाल ५ बजे आयोजित किया गया। अब इसके पश्चात् यह नियमित रूप से आयोजित होता रहेगा।

थरवई आश्रम

थरवई, उत्तर प्रदेश

थरवई (इलाहाबाद शहर से १३ कि.मी.) के कुछ लोग वर्ष १९८३ में मिशन से जुड़े थे। ये लोग इलाहाबाद में सत्संग में उपस्थित हुआ करते हैं। प्रशिक्षक भाई एल.के.त्रिपाठी एवम् भाई सुभाष चन्द्र मिश्रा के प्रयास से लगभग ८०० वर्ग मीटर भूमि क्रय कर दिनांक २२ मार्च २००६ को पंजीकृत करायी गयी थी।

स्थानीय विधायक एवम् सांसद के विवेकाधीन वित्तीय कोष से १००० वर्ग फीट (२५ फीटx४० फीट) का एक कक्ष ध्यान हेतु बनाया गया तथा अभ्यासियों द्वारा दी गयी राशि से अतिरिक्त सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई। भाई यू.एस.बाजपेयी, सचिव, ने औपचारिक रूप से इस ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया। इन्होंने दिनांक ११ दिसम्बर, २०११ को सत्संग आयोजित करवाया। इस उद्घाटन समारोह में इलाहाबाद तथा आस–पास के केन्द्रों से भारी संख्या में अभ्यासी उपस्थित हुए।

पय्यानूर आश्रम, केरल

यह आश्रम कन्नूर जिले के पय्यानूर–चेन्नई मार्ग पर पय्यानूर से १० कि.मी. दूर स्थित है। सुन्दर एवम् विहंगम परिदृश्य का यह स्थल तीन एकड़ में फैला हुआ है जो कि वर्ष २००७ में क्रय किया गया था और अभ्यासियों द्वारा मिशन को दान स्वरूप भेंट किया गया। अभ्यासियों द्वारा इस स्थान के पास एक कॉलोनी भी बनाई गयी है। १०० अभ्यासियों की संख्या की क्षमता वाला एक अस्थायी ध्यान कक्ष निर्मित किया गया था। वर्तमान में ६०–७५ अभ्यासी नियमित रूप से रविवारीय सत्संग में उपस्थित होते हैं।

दिनांक २९ जनवरी २०१२, रविवार को सत्संग के आयोजन के पश्चात् लगभग ७५ अभ्यासी यहां एकत्रित हुए और केन्द्र–प्रभारी, भाई कुन्हीकन्नन ने रसोई घर एवम् प्रसाधन प्रभाग की आधारशिला रखी। तत्पश्चात् प्रत्येक अभ्यासी ने यहां ध्यान किया। एक विशाल ध्यान कक्ष एवम् मास्टर्स कॉटेज के निर्माण की भावी योजना बनाई जा रही है।

दूसरा प्राध्यापक विकास कार्यक्रम

बनशँकरी आश्रम, बेंगलौर

यह कार्यक्रम बंगलौर के बनशँकरी आश्रम में ३६ अभ्यासियों के लिये तीन चरणों में (१६ अक्तूबर, ५ से ६ नवम्बर तथा २६ से २७ नवम्बर २०११) संचालित किया गया।

इसके मुख्य उद्देश्य सहभागियों की साधना, गुरुदेव से संबंध, सहजमार्ग के गहन ज्ञान को बाँटना तथा उनके द्वारा सहज मार्ग के मुख्य बिन्दुओं को आध्यात्मिक रूचि रखने वालों तक प्रभावी रूप से पहुँचाना था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम सामुदायिक चर्चा से आरम्भ होकर, एक चुने हुए विषय पर अभ्यासियों के समूह से वार्ता तक आगे बढ़ा । बाद में सभी एक निश्चित उद्धरण पर दो से तीन मिनट तक मंच पर आकर बोले। अन्त में उनसे एक निश्चित विषय पर श्रोताओं के कृत्रिम समूह (अभ्यासी, छात्र,ग्रहणी आदि) के समक्ष २० मिनट वार्ता देने के लिये कहा गया। चयनित सदस्यों द्वारा सहभागियों के व्यक्त करने की क्षमता तथा सम्प्रेषण योग्यता का अवलोकन किया गया तथा उन्हें प्रगति के लिये सुझाव दिये गये।

यह कार्यक्रम भाई बी. श्रीनिवास, भाई जी. सुब्रमण्यम, भाई कृष्णामूर्ति, भाई प्रभाकर, भाई जी. सत्यनारायण तथा बहिन माधुरी के द्वारा आयोजित किया गया।

खेल कूद दिवस

जयपुर, राजस्थान

१ जनवरी २०१२ को जयपुर केन्द्र द्वारा खेल कूद दिवस का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अभ्यासियों में घनिष्ठता लाने के लिये संचालित किया गया था, जिसमें १२० अभ्यासियों ने भाग लिया। इसमें उछल कूद, रस्साकशी, वरिष्ठ नागरिक दौड़ आदि खेलों का आयोजन किया गया। अनुशासित बच्चों तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये। वर्ष के प्रथम दिवस पर आयोजित गतिविधि ने प्रतिभागी अभ्यासियों के दिलों में खेल भावना, भाईचारा एवं अनुशासन का संचार कर दिया।

साधना, लक्ष्य तथा अभिलाषा पर युवा संगोष्ठी

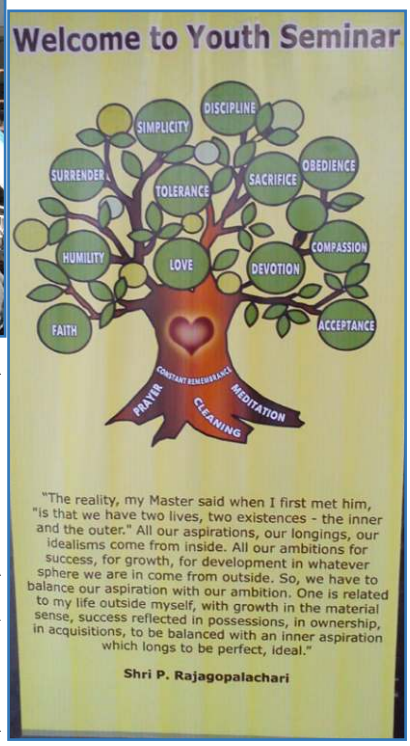

१० से १२ फरवरी तक, ५५ अभ्यासी तथा १२ प्रशिक्षकों ने क्षेत्रीय आश्रम हैदराबाद में आयोजित सेमिनार में भाग लिया। गुरुदेव की उक्तियों तथा मिशन के रिट्रीट सेन्टर्स के चित्रों ने प्रेरक एवं दर्शनीय वातावरण उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

प्रथम सत्र, साधना एवं डायरी लेखन पर आधारित था। इसके पश्चात् सभी प्रतिभागियों को व्यक्तिगत सीटिंग दी गयी तथा अभ्यासियों ने अपने दैनिक अभ्यास में आने वाली कठिनाईयों का प्रशिक्षकों से समाधान ढूँढने में समय बिताया।

शनिवार को गुरुदेव की दो वार्ताओं के पत्र पढने एवं विचार करने हेतु वितरित किये गये। भोजन के उपरान्त अभ्यासियों ने खेलों मे भाग लिया, जिसमें उनके बचपन की यादें ताजा हो गयीं।

भाई मलिक ने प्रतिभागियों को सम्बोधित किया, तत्पश्चात् भाई बालाजी ने लक्ष्य पर एक वार्ता दी। प्रतिभागियों ने सहजमार्ग के लक्ष्य पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा बताया कि साधना से किस प्रकार लक्ष्य के प्रति उनकी समझ का विकास हुआ। रात्रि भोजन के बाद वीडियो सी.डी. चलाई गयी।

रविवार का कार्यक्रम 'चरित्र निर्माण' पर केंद्रित रहा। गुरुदेव की नई वार्ता "चरित्र निर्माण" वितरित की गयी। बहिन अर्चना ने परस्पर प्रभावित करने वाला सत्र संचालित किया जिसमें अभिलाषाओं को पाने के लिये छोटे–छोटे परिवर्तनों के द्वारा जीवन को ढाला जा सकता है।

दोपहर बाद , गुरुदेव की वीडियो दिखाई गयी , तत्पश्चात् शान्त आत्मनिरीक्षण किया गया। प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया भाव–विभोर करने वाली थी। प्रतिभागियों ने अनुरोध किया कि इस प्रकार के सेमिनार निरन्तर आयोजित किये जाने चाहिए।

निबन्ध प्रतियोगिता प्रमाण पत्र वितरण

अहमदनगर

११ फरवरी को निबन्ध प्रतियोगिता दल पुरस्कार प्रमाण पत्र वितरित करने हेतु प्रतिभागी स्कूलों में गया। वे विजेताओं को सम्मानित करने हेतु श्री शिवाजी सैनिक स्कूल एवं शिवशंकर विद्या मन्दिर गये। इस वर्ष अहमदनगर केन्द्र को २ जोनल पुरस्कार मिले । सहज मार्ग अभ्यास शुरु करने के इच्छुक शिक्षकों के लिये जन सभा का आयोजन किया गया।

नासिक

११ फरवरी को प्रतिभागी एवं विजेताओं के लिये एक समारोह आयोजित किया गया। दस विद्यार्थियों ने भाग लिया। एस. आर. सी. एम. के बारे में संक्षिप्त जानकारी को लगभग तीस प्रतिभागियों ने तन्मयता के साथ सुना। उन्होंने मिशन द्वारा युवाओं में उचित जीवनयापन के लिये किये जा रहे कार्यों को सराहा। भाई टाँक ने पुरस्कार वितरित किये। विजेताओं को "मालिक मुझे बतायें" पुस्तक की प्रति एवं पेन उपहार में दिये गये।

बंगलौर

बनशंकरी आश्रम में पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मंगलौर से १६ वर्षीय विजेता यशस्वी नायक ने कहा, "मंगलौर में मेरे पिताजी जब भी हमें अकेले छोड़ते थे, मुझे दैनिक पूजा पद्धतियों को करना पड़ता था तथा मैं इसे अध्यात्म समझता था। आज यहाँ आकर व आप सबको सुनकर मुझे अब पता चला है कि अध्यात्म का मतलब मानवता की सेवा है।"

वहाँ पर ११ 'पुरस्कार विजयी शैक्षणिक संस्थाओं' से ३० मेहमान थे। दक्षिण कर्नाटक क्षेत्र से ३३० संस्थाओं के ३३०० विद्यार्थियों ने निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लिया।

बाबूजी मेमोरियल आश्रम का आठवाँ वार्षिक उत्सव

कलकत्ता, प.बंगाल

२४ दिसम्बर,२०११

सुबह की कड़क ठंड में दुर्गापुर, बोन्डल, फरक्का, झारखंड स्टेट एवं कलकत्ता के लगभग ७० अभ्यासी इस अवसर पर एकत्रित हुए। सुबह का सत्र 'ध्यान' पर एवं शाम का सत्र 'सफाई' पर था। प्रतिभागियों को ५ मिनट ध्यान में हृदय में दिव्य प्रकाश से पुर्नसम्पर्क करने के लिये कहा गया। उन्हे संचालकों के द्वारा ५ दलों में विभजित किया गया व उनसे दस नियमों, जो कि चुनिंदा चर्चा के साथ पढ़े जा रहे थे, के गूढ़ अर्थ पर विचार करने के लिये कहा गया।

बाल केन्द्र ने बच्चों को दिनभर व्यस्त रखने के लिये विभिन्न क्रियाशील गतिविधिओं का आयोजन किया।

२५ दिसम्बर–बच्चों के लिये खेल दिवस

रविवार सत्संग के बाद, बाल केन्द्र ने खेल दिवस का आयोजन किया। बच्चों, वयस्कों, व दादाओं नानाओं ने भी गतिविधिओं में भाग लेकर आनन्द उठाया।

उत्सवीय भोजन के बाद पुरस्कार वित्रित किये गये एवं सायंकाल सत्संग के साथ दैनिक गतिविधियाँ समाप्त हुईं। सभी प्रतिभागिओं ने अपने अभ्यास के प्रति नवीन व हर्षपूर्ण प्रतिबद्धता के साथ

चरित्र निर्माण पर कार्यक्रम

बीकानेर, राजस्थान

वर्ष २०१२ के पहले दिन के स्वागत में अभ्यासियों ने "चरित्र निर्माण की सार्थकता" पर एक आधे दिन के कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रतिभागियों को तीन समूहों में बांटा गया और प्रत्येक समूह को चरित्र निर्माण सम्बंधित चार विषय जैसे आचरण, प्रेम, नम्रता, त्याग आदि दिए गए। प्रत्येक समूह के प्रतिनिधि द्वारा आपसी विचार–विमर्श के सारांश को प्रस्तुत किया गया। सभी बिंदु यह दर्शाते हैं कि गुरुदेव एक अभ्यासी से यह अपेक्षा करते हैं कि वह समाज और भौतिक संसार में प्रेम, त्याग और आत्ममूल्यांकन को प्रतिबिंबित करे। भाई मान सिहं इन्दा ने "आत्म मूल्यांकन द्वारा नकारात्मकता को दूर करना" पर व्याख्यान दिया। भाई अनिल कुमार नें भाई कमलेश पटेल के पत्र (इमेल) की मुख्य बातें, समर्पण के नैतिक गुण और मालिक का हमारे प्रति प्रेम तथा उससे हम कैसे प्रभावित होतें हैं, भी पढ़ीं। कार्यक्रम की समाप्ति धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुई।

मुंबई में प्रिंट डिज़ाइन पर प्रशिक्षण कार्यशाला

पनवेल क्षेत्रीय आश्रम में ३१ दिसंबर २०११ और ०१ जनवरी २०१२ को "प्रिंट डिज़ाइन" पर एक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसकी व्यवस्था ऐसे स्वयं–सेवक अभ्यासियों के लिए की गई थी जो कि मिशन के लिए ब्रौशर, कैटेलॉग, पोस्टर, किताबें इत्यादि डिज़ाइन करना चाहते हैं। इस आयोजन में पुणे, मुंबई, जलगाँव और नासिक से १५ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

एक डिज़ाइन का ख़ाका तैयार करते समय डिज़ाइन के मूल सिद्धांतों तथा डिज़ाइन के सिद्धांतों का प्रयोग करने की महत्ता को कार्यशाला की विषय–सूची में शामिल किया गया। प्रतिभागियों को सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण दिया गया, जो उन्हें डिज़ीटल कलाकृति तैयार करने में मदद करेगा। प्रयोगशाला सत्र हस्त–आरेख पर संकेन्द्रित था जहां पर उन्हें डिज़ाइन सिद्धांतों को प्रयोग करके पोस्टर डिज़ाइन करने का कार्य दिया गया था। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ भाग लिया तथा इस विस्तारित टीम से डिज़ाइन उपलब्ध कराने में मिशन लाभान्वित होगा।

तनाव प्रबंधन (स्ट्रैस मैनेजमेन्ट) पर संगोष्ठी

जयपुर, राजस्थान

८ जनवरी, २०१२ को एच डी एफ सी लाइफ, जयपुर के क्षेत्रीय कार्यालय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके प्रतिभागी एच डी एफ सी लाइफ के शाखा प्रबंधक थे, जो मन के नियमन द्वारा तनाव के प्रबंधन को सीखना, ध्यान से अंतर्दृष्टि की प्राप्ति और सहज मार्ग हमें क्या देता है, यह समझना चाहते थे। सत्र की व्यवस्था श्री संदीप नैय्यर द्वारा की गई और श्री मनोज नागर द्वारा इसका आयोजन किया गया। जयपुर के केन्द्र प्रभारी ने बताया कि ध्यान आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में किस प्रकार लाभदायक एवं सहायक हो सकता है।

सत्र आपसी चर्चा का था और प्रतिनिधियों ने अनेकों प्रश्न पूछे तथा उनसे संबधित संदेहों का निराकरण किया। संगोष्ठी ने सभी का मार्ग दर्शन किया।

स्पैक्ट्रम स्पिरिच्यूअल क्लब द्वारा नांदेड़ आश्रम को भेंट

स्पैक्ट्रम स्पिरिच्यूअल क्लब की ओर से २७ जनवरी २०१२ को १५ महिलाओं का एक समूह नांदेड़ फाटा आश्रम में सहज मार्ग के सम्बंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए आया।

प्रश्नोत्तरी का एक सत्र बहन शुबदा आपटे के द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें महिलाओं ने प्रभावशाली ढंग से उत्तर दिये।

इस के बाद सहज मार्ग की गहन जानकारी बहन सुरभि और बहन वैद्य द्वारा दी गई। यात्रा की समाप्ति दोपहर के स्वादिष्ट भोजन के साथ की गई जो स्वयं सेवकों द्वारा तैयार किया गया था तथा अतिथियों ने इसका आश्रम के छायादार वृक्षों के नीचे बैठकर आनन्द लिया।

गुलबर्गा आश्रम

प्रकाश का केन्द्र

बाबूजी द्वारा बीजारोपण

गुलबर्गा उत्तर कर्नाटक का प्रभागीय मुख्यालय (हेड क्वार्टर) शहर है, जो बहमनी साम्राज्य का जन्मस्थल था। मिशन की शुरुआत यहां १९५७ में हुई और भाई एस. ए. सारनादजी इस केन्द्र के प्रथम समूह के अभ्यासी थे। बाद में उन्होंने कई वर्षों तक मिशन के सेक्रेटरी के रूप में सेवाएँ दी।

बाबूजी महाराज ने सन् १९५७, १९६३, और १९६८ में इस केन्द्र के दौरे कर इसे पोषित किया। गुलबर्गा में १५ दिसंबर १९५७ के वार्षिक उत्सव के दौरान बाबूजी महाराज ने अपने सन्देश में बड़े प्रेम से सहज मार्ग का सरलीकरण इस प्रकार किया – "मैं अपने स्वयं के अनुभव से एक सरल विधी सुझाता हूं, जिसका हर कोई आसनी से पालन कर सके। अगर कोई अपना दिल बेच सके, यानि इसे गुरुदेव को उपहार में दे सके, तो इसके बाद शायद ही कुछ करने को बचे। इससे उसे स्वाभाविक रुप से अनंत सत्य के साथ लय होने कि अवस्था प्राप्त होगी।"

आश्रम व उसकी गतिविधियां

इस केन्द्र में अभ्यासियों की संख्या बढकर अब लगभग ४५० हो गयी है और रविवारीय सत्संग में उपस्थिती औसत १७० होती है। वर्तमान आश्रम की नींव सदम रोड पर रेल्वे स्टेशन से ५ किलोमीटर की दूरी पर गुरुदेव द्वारा २४ मार्च १९९३ में रखी गई और उन्हीं के द्वारा १३ मई १९९४ को इसका उद्घाटन किया गया। यह १८००० वर्ग फीट की दो मंज़िला इमारत है जिसमें ३०० अभ्यासियों की क्षमता का ध्यान कक्ष, आवास–गृह, कार्यालय, रसोइघर, प्रसाधन खंड, बुक स्टोर एवं पुस्तकालय हैं । यहां सत्संग रविवार एवं मंगलवार, बुधवार, गुरुवार शाम को आयोजित होता है। व्यक्तिगत सिटिंग शुक्रवार और शनिवार शाम को संचालित होती है। एक समर्पित स्वयंसेवकों की टीम हमेशा मिशन की गतिविधियों में सक्रिय रहती है।

समर्पण का रहस्य

गुरुदेव नें १९८४, १९८७, १९८९, १९९०, १९९३, १९९४, १९९८ और २००२ में अपनी यात्राओं के ज़रिये इस केन्द्र एवं आश्रम के विकास में भूमिका निभाई है। अपनी आखिरी बार की यात्रा के दौरान गुरुदेव ने समर्पण एवं आध्यात्मिक उन्नति का रहस्य प्रकट किया कि यह और कुछ नहीं बल्कि गुरुदेव के लिये काम करना है, "शरणागति एक शब्द है, पर यह विभिन्न मनोदृष्टियों को सम्मिलित करता है जो सभी आवश्यक हैं, और सबसे सरल रास्ता, जो मैंने अपनाया, आप जानते हैं, मैं उनका काम करता जाता हूं और यह मेरे लिये काम करता है।

भविष्य

हाल ही में केन्द्र ने सदम रोड पर ३४ एकड़ जमीन प्राप्त की है, जिसमें से १२ एकड़ मिशन के लिये तथा बचा हुआ क्षेत्र आवासीय कॉलोनी के लिये आरक्षित है। गुरुदेव ने आश्रम का नाम "बाबूजी मेमोरियल आश्रम" गुलबर्गा और आवासीय कॉलोनी का "योग जीवन एनक्लेव" रखा है। विकास के आगामी चरण के साथ, गुलबर्गा का भविष्य तीव्र उन्नति की ओर अग्रसर होता हुआ प्रतीत होता है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.